ग्रन्थमाला ‘आदर्श राष्ट्ररचना’ : हिन्दू राष्ट्र – खण्ड २

हिन्दू राष्ट्र : आक्षेप एवं खण्डन

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

श्री. रमेश हनुमंत शिंदे (प्रवक्ता, हिन्दू जनजागृति समिति)

श्री. चेतन धनंजय राजहंस (प्रवक्ता, सनातन संस्था)

सनातन संस्था

卐 सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४३, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९६, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला २९, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

नवम्बर २०२३ तक ३६४ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९४ लाख ६७ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

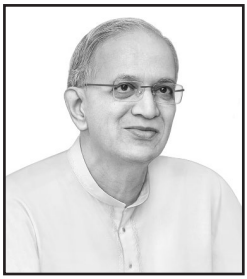

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे २१.११.२०२३ तक १२७ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४७ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

श्री. रमेश शिंदे (प्रवक्ता, हिन्दू जनजागृति समिति)

'सनातन धर्मभूषण', 'हिन्दू कुलभूषण पुरस्कार' आदि पुरस्कारोंसे सम्मानित आप धर्मप्रसारकके रूपमें देशभर यात्रा करते हैं । 'बुद्धिवादियोंका अहंकार', धर्म-परिवर्तन, 'हिन्दू राष्ट्र', 'मनुस्मृति', 'लोकतन्त्रकी दुष्प्रवृत्तियां' आदि सम्बन्धी सनातनके ग्रन्थोंके संकलनकर्ता हैं ।

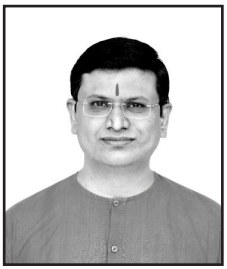

श्री. चेतन राजहंस (प्रवक्ता, सनातन संस्था)

'सनातन धर्मवीर'की उपाधिसे सम्मानित हैं व विविध दूरदर्शन वाहिनियोंपर हिन्दू धर्मका पक्ष रखते हैं । सनातनके ग्रन्थोंका संकलन और हिन्दू-संगठन हेतु यात्रा करते हैं । गोवामें 'अखिल भारतीय हिन्दू राष्ट्र अधिवेशन'के आयोजनमें सक्रिय सहभाग रहता है ।

डॉ. जयंत आठवलेजीकी 'सच्चिदानंद परब्रह्म' उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

'१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका'के वाचनके माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले' सम्बोधित किया जा रहा है। सप्तर्षियोंकी इस आज्ञाका उद्देश्य है कि 'सच्चिदानंद परब्रह्म' उपाधिके सम्बोधनसे 'परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीमें विद्यमान ईश्वरीय तत्त्वका सभीको लाभ हो।' (१३.७.२०२२ से पहले सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीको सनातनके ग्रन्थोंमें 'प.पू. [परम पूज्य]' एवं 'परात्पर गुरु' की उपाधियोंसे सम्बोधित किया है।) इन उपाधियोंके अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थके मुखपृष्ठपर एवं ग्रन्थमें आवश्यक स्थानोंपर वैसा उल्लेख किया है।' – **(पू.) श्री. संदीप आळशी, सनातनके ग्रन्थोंके संकलनकर्ता (२४.७.२०२२)**

ग्रन्थकी भूमिका

आजकल 'हिन्दू राष्ट्र' शब्द 'सेक्युलर भारत'में आक्षेपजनक माना जाता है । कुछ लोगोंको तो 'हिन्दू' इस शब्दके सन्दर्भमें ही मूलभूत आक्षेप है । 'सेक्युलर' विचारकोंका आक्षेप है कि 'हिन्दू राष्ट्र'की कल्पना असंवैधानिक है ।' सामाजिक सौहार्द्रकी डींगे मारनेवालोंको 'हिन्दू राष्ट्र संकीर्ण अथवा कट्टरपन्थी' प्रतीत होता है । अहिन्दू पन्थियोंको लगता है कि 'हिन्दू राष्ट्र' उनकी प्रगतिमें रुकावट बनेगा । ये आक्षेप प्रातिनिधिक उदाहरण हैं, ऐसे अनेक आक्षेप 'हिन्दू राष्ट्र' इस शब्दको घेरे हुए हैं । इन आक्षेपोंकी वास्तविकता क्या है ? भारत स्वयम्भू 'हिन्दू राष्ट्र' है क्या ? एवं 'हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके लिए कार्य करनेवालोंका मूलभूत विचार क्या है', इन प्रश्नोंका उत्तर देने हेतु यह ग्रन्थ है ।

अनादि कालसे 'हिन्दू राष्ट्र' भारतकी पहचान थी । इस्लाम एवं ब्रिटिश शासनकालमें भी हिन्दू राजाओंने यह पहचान बनाए रखी थी । वर्ष १९४७ के विभाजनके उपरान्त भारतकी यह पहचान मिटानेका संविधान सभामें असफल प्रयत्न हुआ । तथापि वर्ष १९७६ में इंदिरा गांधीने असंवैधानिक पद्धतिसे भारतीय संविधानमें 'सेक्युलर' शब्द जोडकर भारतकी 'हिन्दू राष्ट्र' यह पहचान समाप्त कर दी । आज लगभग ४२ वर्षोंमें ही विदेशी 'सेक्युलर'वाद सम्माननीय है और 'हिन्दू राष्ट्र' निकृष्ट श्रेणीका माना जा रहा है । उससे भी आगे वर्तमानमें 'हिन्दू राष्ट्र'का उच्चार ही अवैध सिद्ध करनेका दुष्ट प्रयत्न चल रहे हैं । यही स्थिति बनी रही, तो भविष्यमें भारत 'अहिन्दू राष्ट्र' होनेका भय है । ऐसे समयपर 'हिन्दू राष्ट्र' इस विषयके सन्दर्भमें आक्षेपोंका खण्डन करना आवश्यक है । यही इस ग्रन्थका प्रयोजन है ।

यह ग्रन्थ पढकर हिन्दू एवं अहिन्दुओंके मनसे 'हिन्दू राष्ट्र' इस अवधारणाके प्रति आक्षेप दूर हो और वे भी संवैधानिक दृष्टिकोणसे भारतको 'हिन्दू राष्ट्र' घोषित करनेके कार्यमें सक्रिय हों, ऐसी जगद्गुरु भगवान श्रीकृष्णके चरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

अनुक्रमणिका

१. हिन्दू राष्ट्र : सैद्धान्तिक विषयोंसे सम्बन्धित आक्षेप एवं खण्डन ११

१ अ. 'हिन्दू' शब्दकी उत्पत्तिके सन्दर्भमें आक्षेप एवं खण्डन ११

१ आ. 'हिन्दू' शब्दकी व्याख्या सम्बन्धी आक्षेप एवं खण्डन १५

१ इ. 'राष्ट्र' शब्द सम्बन्धी आक्षेप एवं खण्डन १८

१ ई. 'हिन्दू राष्ट्र' संकल्पनासम्बन्धी आक्षेप एवं खण्डन २३

२. धर्माधारित राष्ट्ररचना सम्बन्धी आक्षेप एवं खण्डन २७

३. 'सेक्युलर' शब्द सम्बन्धी आक्षेप और खण्डन ३६

४. अल्पसंख्यकोंका तुष्टीकरण एवं बहुसंख्यक हिन्दुओंपर अन्याय करनेवाला भारतका पक्षपाती 'सेक्युलर'वाद ! ५०

५. भारतका संविधान, हिन्दू धर्म एवं हिन्दू राष्ट्रकी अनिवार्यता ! ५५

६. हिन्दू राष्ट्र एवं आदर्श राज्यव्यवस्था के दृष्टिकोणसे संविधानमें किए जानेयोग्य संशोधन ६०

७. भारत 'हिन्दू राष्ट्र' बननेके विषयमें सामाजिक आक्षेप एवं खण्डन ६६

८. भारत 'हिन्दू राष्ट्र' बनने सम्बन्धी आर्थिक आक्षेप एवं खण्डन ७५

९. भारत 'हिन्दू राष्ट्र' बननेके विषयमें प्रशासकीय आक्षेप एवं खण्डन ८०

ऋणनिर्देश

इस ग्रन्थके संकलनके लिए केन्द्र सरकारके भूतपूर्व सांस्कृतिक परामर्शदाता प्रो. रामेश्वर मिश्र (भोपाल, मध्य प्रदेश) के 'भारत का संविधान, भारत का धर्म' इस हिन्दी भाषाके ग्रन्थका, साथ ही ज्येष्ठ सावरकरवादी लेखक डॉ. अरविंद गोडबोले (पुणे, महाराष्ट्र)के 'हिन्दुत्व विचार : आक्षेप एवं वास्तव' इस मराठी ग्रन्थका बहुत उपयोग हुआ । इसके लिए उनके प्रति कितनी भी कृतज्ञता व्यक्त करें, अल्प ही होगी ।